केन्द्रीय विद्यालय संगठन
संभाग–वाराणसी
संकलन मूल्यांकन II(2014–15)

कक्षा–X **अधिकतम अंक–90**
विषय–हिन्दी **अधिकतम समय–3घण्टे**

सेट-1

सामान्य निर्देश

1. इस प्रश्नपत्र में कुल 4 खण्ड हैं–क, ख, ग, घ
2. चारों खण्डों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासम्भव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

(खण्ड 'क')

प्र01 निम्नलिखित गद्यांश की ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए 1×5=5

अच्छा नागरिक बनने के लिए भारत के प्राचीन विचारकों ने कुछ नियमों का प्रावधान किया है। इन नियमों में वाणी और व्यवहार की शुद्धि, कर्त्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, शुद्धतम पारस्परिक सद्भाव, सहयोग और सेवा की भावना आदि नियम बहुत महत्वपूर्ण माने गए हैं। ये सभी नियम यदि एक व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के रूप में भी अनिवार्य माने जाएँ, तो उसका अपना जीवन भी सुखी और आनंदमय हो सकता है। इन सभी गुणों का विकास एक व्यक्ति में यदि उसकी बाल्यावस्था से ही किया जाए, तो वह अपने देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है। इन गुणों के कारण वह अपने परिवार, आस–पड़ोस, विद्यालय में अपने सहपाठियों एवं अध्यापकों के प्रति यथोचित व्यवहार कर सकेगा। वाणी एवं व्यवहार की मधुरता सभी के लिए सुखदायक होती है, समाज में हार्दिक सद्भाव की वृद्धि करती है, किंतु अहंकारहीन व्यक्ति

ही स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग कर सकता है। अहंकारी और दंभी व्यक्ति सदा अशिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी होता है, जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसे आदमी के व्यवहार से समाज में शांति और सौहार्द्र का वातावरण नहीं बनता।

प्र0.i वाणी और व्यवहार की शुद्धि, कर्त्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, शुद्धतम पारस्परिक सद्भाव, सहयोग और सेवा की भावना आदि को बताया गया है–

(क) अच्छा नागरिक बनने के नियम

(ख) जीवन की सीख

(ग) जीवन जीने के सिद्धांत

(घ) जीवन शिक्षा

प्र0.ii एक व्यक्ति तभी अपने देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है, जब

(क) बालक को स्वास्थ्य का महत्त्व बताया जाए

(ख) सभी गुणों का विकास उसकी बाल्यावस्था से ही किया जाए

(ग) बालक को अच्छी शिक्षा दी जाए

(घ) बालक को झूठ आदि बोलने से रोका जाए

प्र0.iii वाणी एवं व्यवहार की मधुरता होती है–

(क) सभी के लिए दुःखदायक

(ख) सभी के लिए परेशानी का कारण

(ग) आर्थिक सुरक्षा का कारण

(घ) सभी के लिए सुखदायक

प्र0.iv अहंकारी और दंभी व्यक्ति सदा होता है–

(क) शिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी

(ख) अव्यावहारिक और अविश्वासी

(ग) अशिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी

(घ) अशुद्ध और अव्यवहार

प्र0.v उपरोक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है–

(क) देश और नागरिक

(ख) नागरिकों के कर्त्तव्य

(ग) कर्त्तव्य और अधिकारी

(घ) नागरिक और हम

प्र0.2 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिएः– 1×5=5

समय परिवर्तनशील है। वह कभी एक सा नहीं रहता। परिवर्तन अपने साथ कुछ अच्छाइयाँ, तो साथ ही कुछ बुराइयाँ लेकर आता है। शिक्षा, उद्योग, चिकित्सा, संस्कृति आदि में कई परिवर्तन आने से मनुष्य का जीवन सुख–सुविधाओं से भर उठा। यह सकारात्मक–नकारात्मक दोनों रूपों में हुआ। सुख समृद्धि के कारण समाज में हिंसा, चोरी, बलात्कार जैसी सामाजिक बुराइयाँ चुनौती के रूप में आईं। आज मनुष्यों की जीवन–शैली में बहुत अंतर आ गया है, जिससे उनके जीवन–मूल्य भी बदल गए हैं। जीवन–मूल्यों में आईं गिरावट के कारण मनुष्य का जीवन दिन–पर–दिन अशांत होता जा रहा है। उसके जीवन मे तनाव, अनिद्रा, हृदय से संबंधित रोग और भय घर कर गया है।

आज समाज में नैतिक पतन, दुराचार, सामाजिक असंतुलन जैसी बुराइयाँ आ गईं है। भारतीयों ने पश्चिमी देशों का अंधा अनुकरण किया, जिससे पश्चिमी संस्कारों तथा संस्कृति ने अपना प्रभाव भारत में दिखाना आरंभ कर दिया। यहाँ के छात्र उच्च अध्ययन के लिए विदेशों में गए और वहाँ की तरक्की के लिए उनकी संस्कृति को ही उत्तरदायी मानकर उसे अपनाने पर जोर देने लगे। आज भारत से जब छात्र विदेश

अध्ययन के लिए जाते हैं तो वे पूर्णतः भारतीय होते हैं, किंतु जब पाँच वर्ष बाद भारत लौटते हैं तो पूरी तरह विदेशी संस्कृति में रंगें होते हैं। विदेशी संस्कृति को अपनानें के कारण उन्हें अपनी संस्कृति में अनेक बुराइयाँ दिखाई देने लगती हैं। उन्हें संयुक्त परिवार प्रथा में दोष नजर आते हैं। भारतीय विवाह पद्धति बेकार लगने लगती है। भारतीय पहनावें और आचार–विचार में उन्हें पिछड़ापन नजर आता है। इस सबके कारण हमारे जीवन–मूल्यों में गिरावट आ रही है।

प्र0.i परिवर्तन अपने साथ कुछ बुराइयाँ लेकर आता है।

(क) अच्छाइयों के साथ ही

(ख) मेहनत और ईमानदारी के साथ ही

(ग) सच्चाई के साथ ही

(घ) बेकारी के साथ ही

प्र0.ii सुख–समृद्धि के कारण समाज में जो सामाजिक बुराइयाँ चुनौती के रूप में आईं, वे हैं–

(क) बेईमानी और झूठ

(ख) झूठ और भ्रष्टाचार

(ग) हिंसा, चोरी और बलात्कार

(घ) भ्रष्टाचार और नकारापन

प्र0.iii पश्चिमी संस्कारों तथा संस्कृति ने अपना प्रभाव भारत में दिखाना आरंभ कर दिया, क्योंकि

(क) पश्चिमी संस्कार भारतीय संस्कारों से अच्छे थे

(ख) भारतीयों ने पश्चिमी देशों का अंधा अनुकरण किया

(ग) पश्चिमी संस्कार अधिक प्राचीन थे

(घ) पश्चिमी संस्कार भारतीय संस्कारों की तुलना में अधिक विश्वसनीय थे

प्र0.iv भारतीय छात्र विदेश अध्ययन के लिए जाते समय भारतीय होते हैं, लेकिन पाँच वर्ष बाद जब वे भारत लौटते हैं तो वे पूरी तरह

(क) बदले हुए होते हैं

(ख) पूरी तरह भारतीय बन गए होते हैं।

(ग) भारतीय संस्कारों के विरोधी होते हैं।

(घ) विदेशी संस्कृति में रंगें होते हैं ।

प्र0.v उपरोक्त गद्यांश का उचित शीर्षक हैं ।

(क) समाज

(ख) समाज में गिरते जीवन–मूल्य

(ग) भारत और विदेश

(घ) भारतीय जीवन–मूल्य

प्र0.3 निम्नलिखित पद्यांश को ध्यापूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प से चुनकर लिखिए 1×5=5

मानना चाहता है आज ही?	अनसुने स्वर में किसी के
तो मान ले	कर उठे जयकार।
त्योहार का दिन	न जाने क्यों
आज ही होगा।	बिना पाये हुए ही दान,
उमंगे यों अकारण ही नहीं उठतीं:	याचक मन
न अनदेखे इशारों पर,	विकल है
कभी यों नाचता है मन।	व्यक्त करने के लिए आभार।
खुले–से लग रहे हैं द्वार मंदिर के?	कोई तो, कहीं तो,
बढ़ा पग–	प्रेरणा का स्रोत होगा ही,

मूर्ति के शृंगार का दिन
आज ही होगा।
न जाने आज क्यों जी चाहता है
स्वर मिलाकर

उमंगें यों अकारण ही नहीं उठतीं,
नदी में बाढ़ आई है,
कहीं पानी गिरा होगा।

प्र0.i कवि ने आज ही त्योहार मनाने के लिए क्या शर्त रखी है?

(क) त्योहार होने के

(ख) मन में इच्छा होने की

(ग) त्योहार के विषय में सोचने की

(घ) खुश होने की

प्र0.ii इस कविता का क्या संदेश है?

(क) इशारों पर नाचने का

(ख) त्योहार मनाने का

(ग) मूर्ति का शृंगार करने का

(घ) खुश होने का

प्र0.iii कवि ने मन में उठती भावनाओं का क्या कारण बताया है?

(क) बिना वर्षा बाढ़ नहीं आती

(ख) मन के विचार अकारण होते हैं

(ग) कार्य या विचार अकारण नहीं होते

(घ) कोई न कोई प्रेरणा का स्त्रोत होता है

प्र0.iv 'नदी में बाढ़ आई है, कहीं पानी गिरा होगा' का आशय है–

(क) मन की विकलता का कोई कारण अवश्य है।

(ख) जब भी वर्षा होती है, बाढ़ आती है

(ग) मन व्यर्थ विचार करता है

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र0.v इस कविता का उपयुक्त शीर्षक हो सकता हैः

(क) मूर्ति का शृंगार

(ख) बाढ़ और वर्षा

(ग) अकारण कुछ नहीं होता

(घ) प्रेरणा

प्र0.4 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए $1\times5=5$

तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला के,
पाते हैं जग में प्रशस्ति अपना करतब दिखला के।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खीच कर ही रहते हैं इतिहासों में लीक।
जिसके पिता सूर्य थे, माता कुंती सती कुमारी,
उसका पलना हुआ धार पर बहती हुई पिटारी।
सूत–वंश में पला चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्‌भुत वीर।
तन से समरशूर मन से भावुक, स्वभाव से दानी,
जाति–गोत्र का नहीं, शील का, पौरूष का अभिमानी
सान–ध्यान, शस्त्रास्त्र का कर सम्यक् अभ्यास,
अपने गुण का किया कर्ण ने आप स्वयं सुविकास।

प्र0.i संसार में तेजस्वी लोग वही होते हैं जो

(क) अपना कुल–शील बतलाकर प्रशस्ति पाते हैं।

(ख) अपने मुख से अपने गुणों का बखान करते हैं।

(ग) अपना गोत्र बतलाकर नहीं, करतब दिखलाकर यश पाते हैं।

(घ) माता–पिता के धन की बदौलत यशस्वी दिखाई देते हैं।

प्र0.ii कर्ण की माता थी–

(क) गांधारी

(ख) सुगंधा

(ग) अनुसूईया

(घ) कुमारी कुंती

प्र0.iii तन से समरशूर का तात्पर्य है–

(क) शरीर से ताकतवर

(ख) शरीर से टक्कर मारने वाला

(ग) शरीर से बलशाली

(घ) युद्ध भूमि में वीरता प्रदर्शित करने के लिए तन से तैयार

प्र0.iv पैदा होने पर कर्ण को कैसे पालने में झुलाया गया था?

(क) जलधारा पर बहती हुई पेटी के पालने में।

(ख) रेशमी धागों से बुने पालने में।

(ग) निबाड़ से बुने हुए पालने में।

(घ) लोहे के संदूकनुमा पालने में।

प्र0. v कविता में कर्ण को तन, मन और स्वभाव से क्रमशः बताया गया है–

(क) क्षीण, कृपण और कुटिल

(ख) बलिष्ठ, भावुक और कृपण

(ग) समरशूर, भावुक और दानी

(घ) कायर, भावुक और कृपण

खण्ड–'ख'

प्र0.5 निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए 1×4=4

(क) सुबह **तेज–तेज** टहलना चाहिए।

(ख) **सत्य की** सदा ही जीत होती है।

(ग) **तुम** यह काम नहीं कर सकते।

(घ) **वाह** !क्या सुन्दर दृश्य है।

प्र0.6 निर्देशानुसार उत्तर दीजिएः 1×3=3

(क) नीलिमा ने कहानी सुनाई और सुष्मिता रो पड़ी (वाक्य पहचान कर लिखें)।

(ख) मोहन पुस्तक पढ़ो (वाक्य पहचान कर लिखें)।

(ग) शशि गा रही थी और नाच रही थी (सरल वाक्य में बदलिए)।

प्र0.7 निर्देशानुसार उत्तर दीजिए 1×4=4

(क) हम लोग रोज नहाते हैं। (वाच्य पहचान कर लिखें)

(ख) कवि के द्वारा कविता पढ़ी गयी। (कर्त्तृवाच्य में बदलिए)

(ग) हिरन तेज दौड़ता है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

(घ) आइए चला जाए। (वाच्य पहचानिए)

प्र0.8 निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त **रस** बताइए : 1×4=4

(क) नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।

(ख) रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।

(ग) किलकत कान्ह घुटुरुवन आवत
मनिमय कनक नंद के आँगन बिम्ब पकरिबे धावत।

(घ) मैं सत्य कहता हूँ सखे, सुकुमार मत जानों मुझे।
यमराज से भी युद्ध में, प्रस्तुत सदा मानों मुझे।

प्र0.9 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए 1×5=5

काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है। काशी आनंदकानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा। भारतरत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के

लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे। नब्बे वर्ष की भरी–पूरी आयु में 21 अगस्त 2006 को संगीत रसिकों की हार्दिक सभा से विदा हुए खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर जिंदा रखा।

प्र0.i काशी की सबसे बड़ी विशेषता लेखक के अनुसार है–

(क) संगीत के संस्कार

(ख) बिस्मिल्ला खाँ जैसा संगीतकार

(ग) मरण को भी मंगल मानना

(घ) आपसी भाईचारा

प्र0.ii बिस्मिल्ला खाँ का जीवन सीख देता है–

(क) संगीत के प्रति प्रेम

(ख) आपसी भाईचारा

(ग) लय और सुर की परख

(घ) काशी के प्रति सम्मान

प्र0.iii बिस्मिल्ला खाँ का अति विशिष्ट पुरस्कार है–

(क) संगीत नाटक अकादमी

(ख) पदम विभूषण

(ग) भारत रत्न

(घ) विश्वविद्यालयों की मानद उपाधि

प्र0.iv बिस्मिल्ला खाँ याद किए जाएँगें–

(क) भाईचारे की प्रेरणा देने के कारण

(ख) संगीत के प्रति प्रेम के कारण

(ग) काशी के प्रति प्रेम के कारण

(घ) इनमें से सभी

प्र0.v 'सुर की तमीज' से तात्पर्य है–

(क) सुर की समझ

(ख) संगीत से लगाव

(ग) संगीत की साधना

(घ) संगीत की प्रेरणा

अथवा

'शिक्षा' बहुत व्यापक शब्द है। उसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है। पढ़ना–लिखना भी उसी के अंतर्गत है।इस देश की वर्तमान शिक्षा–प्रणाली अच्छी नहीं है। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने–लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा–प्रणाली कौन–सी बड़ी अच्छी हैं। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा की प्रणाली में संशोधन कीजिए। उन्हे क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देना चाहिए और कहाँ पर देना चाहिए–घर में या स्कूल में इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में आवे सो कीजिए; पर परमेश्वर के लिए यह न कहिए कि स्वयं पढ़ने–लिखने में कोई दोष है–वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह गृह–सुख का नाश करने वाला है। ऐसा कहना सोलहो आने मिथ्या है।

प्र0.i 'शिक्षा' बहुत व्यापक शब्द है क्योंकि–

(क) 'शिक्षा' में पढ़ना–लिखना आता है।

(ख) शिक्षा में सीखने योग्य समस्त विषय आते हैं।

(ग) शिक्षा सभी लोग ग्रहण करते हैं।

(घ) शिक्षा अधिकतर लोग ग्रहण करते हैं।

प्र0.ii लोग स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी क्यों समझ बैठते हैं ?

(क) वर्तमान खराब शिक्षा प्रणाली के कारण।

(ख) स्त्रियों के बुरे कार्यों के कारण।

(ग) पढ़ने के लिए स्त्रियों का घर से बाहर निकलने के कारण

(घ) इनमें से कोई नही।

प्र0.iii अभिमान का उत्पादक क्या ह ै?

(क) स्त्रियों की शिक्षा का हितकारी मानना।

(ख) स्त्रियों की शिक्षा को अनर्थकर मानना।

(ग) स्त्रियों के लिए स्कूल–कालेज खुलवाना।

(घ) स्त्रियों की शिक्षा के लिए शिक्षा–प्रणाली बनाना।

प्र0.iv लेखक किस बात पर विचार करने के लिए कहता है ?

(क) शिक्षा प्रणाली में संशोधन करने के लिए।

(ख) शिक्षा प्रदान करने के स्थान के बारे में।

(ग) शिक्षा के प्रकार के बारे में।

(घ) इन सब पर।

प्र0.v क्या कहना सोलहो आने मिथ्या है ?

(क) स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकर है।

(ख) स्त्रियों को पढ़ाना गृह–सुख का नाशक है।

(ग) इनमें से दोनो।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

प्र010 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः– 2×5=10

(क) लेखिका 'मन्नू भण्डारी' के व्यक्तित्व पर हिन्दी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव किस रूप में पड़ा। एक अध्यापक छात्र के व्यक्तित्व में और क्या–क्या प्रभाव डाल सकता है?

(ख) पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा बोलना क्या उनके अनपढ़ होने का सबूत है– पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

(ग) पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली–जुली संस्कृति के प्रतीक थे?

(घ) आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?

(ङ) मानव की जों योग्यता उससे आत्मविनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे संस्कृति कहें या असंस्कृति? कारण सहित उत्तर दीजिए।

प्र011 निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए 1×5=5

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही, बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहु भुज छेद निहारा, परसु बिलोकु महीप कुमारा।।
मातु–पितहि जनि सोच बस, करसि महीस किसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन, परसु मोर अति घोर।।

(क) परसुराम ने अपने किन–किन कार्यों का बखान किया?

(ख) सहसबाहु के पास कितनी भुजाएँ थी?

(ग) 'महीस' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(घ) परसुराम की इन उक्तियों से उनके स्वभाव के किस पक्ष का पता चलता है?

(ङ) 'दलन' शब्द का क्या अर्थ है?

अथवा

दुविधा हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला, शरद रात आने पर?
क्या हुआ जो खिला फूल रस–बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) प्रस्तुत काव्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।

(ख) वर्तमान में दुख होने से जीवन में और क्या–क्या होने लगता है?

(ग) बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेहु का भाव किन पंक्तियों में निहित है?

(घ) उपर्युक्त काव्यांश में जीवन के प्रति कवि का क्या दृष्टिकोण है?

(ङ) 'शरद–रात' में कौन सा समास होगा?

प्र012 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 2×5=10

(क) परसुराम के क्रोध का मूल कारण क्या था? स्पष्ट कीजिए?

(ख) 'छाया मत छूना' का कवि यथार्थ के पूजन की बात क्यों करता है? उसकी दृष्टि में यथार्थ का स्वरूप क्या है?

(ग) संगतकार द्वारा अपनी आवाज को ऊँचा न उठाने के पीछे क्या कारण हो सकता है?

(घ) आप के विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसा दिखाई मत देना?

(ङ) साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

प्र013 देश के प्राकृतिक स्थानों के सौन्दर्य का आनन्द लेते समय अधिकांश सैलानी वहाँ के पर्यावरण को दूषित कर देते हैं। इस नैसर्गिक सौन्दर्य की सुरक्षा में आप अपने दायित्व का निर्वाह कैसे करेंगे? साना–साना हाथ जोड़ि पाठ के आलोक में उत्तर दीजिए। 5

(खण्ड– 'घ')

प्र014 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 10

(क) भारत के विकास में बाधाएँ

- भूमिका
- बढ़ती आबादी एवं गरीबी
- काम चोरी एवं भ्रष्टाचार
- हमारा प्रयास
- निष्कर्ष

(ख) महानगर : समस्याओं का महासागर

- घनी जनसंख्या एवं मलिन बस्तियाँ
- यातायात, मकान एवं प्रदूषण
- समाधानः सरकार एवं आम जन का सहयोग

(ग) छात्र–जीवन में जीवन मूल्य

- जीवन मूल्यों की उपयोगिता
- छात्र जीवन में उचित अनुचित की समझ का अविकसित रूप
- छात्रों के लिए जीवन मूल्यों की आवश्यकता
- निष्कर्ष

प्र015 सड़क सुरक्षा पर ध्यान आकर्षित कराते हुए अपने उस मित्र को पत्र लिखिए जो तीव्र गति से मोटर साइकिल चलाता है। 5

अथवा

समाज में बढ़ रहे नशाखोरी तथा उससे उपजी समस्याओं की ओर ध्यान दिलाते हुए जिलाधिकारी को शिकायती एवं रोकथाम हेतु पत्र लिखिए।

प्र016 दिए गए गद्यांश का सार लिखिए– 5

रामकृष्ण परमहंस ने कहा है कि समय और समझ, दोनों एक साथ खुश किस्मत लोगों को ही मिलते हैं, क्योंकि अक्सर समय पर समझ नहीं आती और समझ आने तक समय निकल जाता है। एक शोध के मुताबिक, अगर आप रोज एक घंटा कोई अतिरिक्त काम करते हैं, तो उससे आप कम से कम इतना पैसा कमा सकते हैं कि दो अखबार, दो–दो साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ और एक दर्जन किताबें खरीद सकें। साथ ही, रोजाना एक घंटा किसी किताब के बीस पन्ने पढ़ सकते हैं, तो साल भर में आप कई हजार पन्ने पढ़ सकते हैं यानी करीब 18 ग्रंथ पढ़ डालेंगे। रोजाना एक घंटे का सही उपयोग साधारण इंसान को विद्वान बनाने के लिए काफी है। समय प्रबंधन का अंदाज उल्टे पिरामिड की तरह होता है। ज्यादा जरूरी काम पहले और कम जरूरी काम बाद में। अगर, इस हिसाब से हम अपने रोज, के हफ्ते के और महीने भर के कामों की प्लानिंग करके काम करते हैं, तो न हड़बड़ाहट होती है, और न ही तनाव । तभी तो कन्फ्यूशियस ने कहा है कि चेतना का नियोजन समय के नियोजन के साथ होना चाहिए जबकि, स्वामी विवेकानंद का कहना था कि एक समय में एक काम करो और बाकी सब भूलकर अपनी पूरी आत्मा उसमें डाल दो।